Patrika (Indore), 28th May 2025, Front Page- plus 01

आइआइटी की रिसर्च

कोरोना वैरिएंट का लंबे वक्त तक रहता असर, बिगाड़ते हैं हार्मोन व मेटाबॉलिज्म

खुलासा... डेल्टा वैरिएंट ने सबसे ज्यादा पहुंचाया नुकसान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. क्या आपको कोविड-19 के बाद थकान, हार्ट, थायरॉइड से जुड़ी समस्याएं हैं? हो सकता है इसका कारण वायरस के अलग-अलग वैरिएंट हों। आइआइटी की रिसर्च में सामने आया है कि वायरस के अलग-अलग रूप शरीर में लंबी अवधि तक असर छोड़ते हैं। कई बार हार्मोंस, मेटाबॉलिज्म व शरीर के जरूरी संतुलन को बिगाड़ देते हैं। यह स्टडी 'जर्नल ऑफ प्रोटिओम रिसर्च' में प्रकाशित हुई, जो आइआइटी इंदौर, केआइएमएस भुवनेश्वर, आइसीएमआर व आइआइटी इलाहाबाद के वैज्ञानिकों ने मिलकर की है।

साइलेंट हार्ट फेल के मामले बढ़ गए: रिसर्च में यह बात सामने आई कि सभी वैरिएंट्स में डेल्टा वैरिएंट ने सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाया। इसने शरीर के हार्मोनल और मेटाबॉलिक सिस्टम को बुरी तरह प्रभावित किया। इससे थायरॉइड विकार, कैटेकोलामाइन हार्मोन में गड़बड़ी और यहां तक कि साइलेंट हार्ट फेलियर जैसे जोखिम भी बढ़े।

क्या किया अध्ययन में?

भारत की पहली-दूसरी लहर के 3,134 मरीजों के डेटा का विश्लेषण किया। उनके खून के 9 अहम बायोमार्कर (जैसे सीआरपी, डी-डायमर, फेरिटीन) का अध्ययन कर मशीन लर्निंग तकनीक से जाना कि किस वैरिएंट ने कितना असर डाला। फेफड़े व कोलन की सेल्स पर स्पाइक प्रोटीन का प्रभाव देखा गया।

फायदा : डॉक्टर समझ सकेंगे

मरीज व इलाज का अलग तरीका आइआइटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी के मुताबिक, यह शोध बताता है कि कोविड-19 केवल सांस की बीमारी नहीं है। यह शरीर के हर हिस्से को गहराई से प्रभावित कर सकता है। डॉ. झा ने कहा, इस रिसर्च से हमें लंबे कोविड लक्षणों को समझने और उनके सही इलाज के लिए दिशा मिलेगी। इस रिसर्च से डॉक्टर अब यह बेहतर समझ सकेंगे कि किस मरीज को किस तरह का इलाज देना है। साथ ही भविष्य में ऐसे वायरस के लिए और बेहतर दवाइयां और टेस्ट भी बनाए जा सकेंगे।

लंबे समय तक क्यों रह जाते रोग के लक्षण?

रिसर्च टीम अनुसार, जब वायरस शरीर में मेटाबॉलिज्म और हार्मोन के रास्तों में गड़बड़ी कर देता है, तब बार-बार थकान, सांस फूलना, हार्ट बीट अनियमित होना, थायरॉइड बढ़ना आदि होता है। डेटा एनालिसिस का नेतृत्व आइआइटी इलाहाबाद की प्रो. सोनाली अग्रवाल ने किया। आइआइटी इंदौर के डॉ. हेम चंद्र झा व डॉ. निर्मल मोहकुद ने रिसर्च को लीड किया।